


---

# Lakshmivishnukrita Shiva Dhyana Stuti

——  
लक्ष्मीविष्णुकृत शिवध्यानस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : Lakshmivishnukrita Shiva Dhyana Stuti

File name : lakShmIviShNUKRRitashivadhyaAnastutiH.itx

Category : shiva, shivarahasya, dhyAnam, lakShmI, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | sadAshivAkhyah navamAMshaH | adhyAyaH 22 |

vAvRRittashlokaH ||

Latest update : July 14, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 14, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Lakshmivishnukrita Shiva Dhyana Stuti

---

### लक्ष्मीविष्णुकृत शिवध्यानस्तुतिः

---



(शिवरुद्रस्थान्तर्गते सदाशिवाप्ये)

अथ ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं मलादेवं साम्भं चन्द्रकलाधरम् ।

भृगुटङ्कुधरं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ १ ॥

नीलकण्ठं विरुपाक्षं रत्नसिन्धुभासनस्थितम् ।

कुल्लकल्लारमालाङ्कुं द्रियपीताम्भरावृतम् ॥ २ ॥

अनल्परत्नाकल्पेन शोभमानं भद्रतरम् ।

स्वर्गदुर्लभपद्मस्थमेवं ध्यायन्स शङ्करम् ॥ ३ ॥

अथ स्तुतिः

सोमास्कन्द विभो त्वदीयविमलं रूपं सुधांशुस्फुर-

ज्जूटाडिस्फुटमौलिकाञ्चितमणिस्फाराङ्गरागोद्भूतम् ।

त्र्यक्षं सौम्यसुधांशुकान्तिलसतिर्यङ्कित्रपुण्ड्राङ्कितं

वीक्षेऽक्षादिविदूरगं तव विभो वङ्गं कटाक्षोदयम् ॥ ४ ॥

त्वत्पादाब्जमरन्दसुन्दरमलावीचीस्फुरन्मौलयो

वृन्दारद्युतिवृन्दवन्दितमलानन्दाम्बुधारास्पदम् ।

ध्यायं ध्यायमुपास्महे तव मलापापौघभित्तेवलं

युक्त्या किं मम साम्प्रतं तव विभो भक्तिं हि याये सदा ॥ ५ ॥

श्री बिम्बिने कवचिने वरसोमधाम

सामिप्रकामशिरसे मम दुःखञ्चरे ।

पात्रे समस्तसुरतावनदीक्षिताय

वल्मीकमध्यविलयाय नमः शिवाय ॥ ६ ॥

गौरीविलासमुष्णपङ्कजसानुनेत्र-

प्रोद्यत्प्रभाधवलिताय मलेश्वराय ।

प्रोद्यत्सुधांशुययवार्धितरङ्ग रिङ्ग-  
द्रङ्गातरङ्गकलितेन्दुजटालकाय ॥ ७ ॥

उद्दण्डयद्दण्डरधारितमेरुमध्य-  
कोदण्डकाय सततं उरशङ्कराय ।  
वाञ्छी(ञ्छे)श तुच्छकुलदेषु न मे स्पृहा स्यात्  
पुच्छं त्वमेव श्रुतिमौलिगिरां सदैव ।  
छच्छा भवेत्तव पदे मम भक्तिभाव-  
स्त्वच्छासनं कलयतो मम किं हि भोगैः ॥ ८ ॥

॥ इति शिवरुद्रस्यान्तर्गते लक्ष्मीविष्णुकृत शिवध्यानस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरुद्रस्यम् । सदाशिवाप्यः नवमांशः । अध्यायः २२ । वाचुत्तश्लोकाः ॥

- .. shrIshivarahasyam . sadAshivAkhyah navamAMshaH . adhyAyaH 22 .  
vAvRRittashlokaH ..

Notes:

Lakṣmī लक्ष्मी and Viṣṇu विष्णु worship and eulogize Śiva शिव. The place where they stayed and conducted the worship came to be known as Kamalālaya कमलालय, and Śiva शिव came to be known as Valmīkeshvara वल्मीकेश्वर.

The word dhyAyannAste has been modified to dhyAyennityaM for the ease of reading this as a standalone composition. The Śloka-s have been renumbered for benefit of the reader(s).

Proofread by Ruma Dewan

---

—  
*Lakshmivishnukrita Shiva Dhyana Stuti*

pdf was typeset on July 14, 2024

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

